# (अव्यक्त इशारे)
## सर्व प्राप्ति सम्पन्न बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह बनो

1) आप संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों को बापदादा ने टाइटल दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई बातें आयें, आयेगी जरूर लेकिन आप बेगमपुर में चले जाना। बेगमपुर में बैठ जाना तो बेफिक्र बादशाह हो जायेंगे।
2) आपने आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जरूर नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी इसलिए कुछ भी हो आपको बेफिक्र बनना है। पुरानी दुनिया में पुराने मकान में जरूर कभी कुछ टूटेगा, कुछ गिरेगा। नथिंगन्यु। यह सब होना ही है, हो रहा है और हम बेफिक्र बादशाह।
3) जो बेफिक्र रहते हैं उनसे निर्णय भी अच्छा होता है क्योंकि उन्हें टचिंग आती है समय अनुसार अभी यह करें या नहीं करें। तो सदैव यह याद रखो - बेफिक्र बादशाह हैं, इस नशे में रहने से फिक्र की बात भी बदल जायेगी।
4) समस्याओं का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी लेकिन आप उसे निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से, नथिंगन्यु समझकर पार कर लो तो बेफिकर बादशाह रहेंगे।
5) कोई भी समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नथिंगन्यु क्योंकि आप अनेक बार विजयी बने हो, गम और बेगम की अभी नॉलेज है, ड्रामा में विजय निश्चित है इसलिए सदा निश्चित स्थिति में रहो तब कहेंगे बेगमपुर के बादशाह।
6) अभी सर्वशक्तियों की प्राप्ति है इसलिए बेफिकर बादशाह हो। लेकिन अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो बेगमपुर का नशा वा खुशी भी खो जाती है। जैसे वह बादशाह भी कंगाल बन जाते हैं, वैसे यहाँ भी माया के अधीन होने से मोहताज, कंगाल बन जाते हैं इसलिए सदा अष्ट शक्ति स्वरूप बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति को कब भूलना नहीं।
7) जहाँ बेगर बनना है वहाँ बादशाह नहीं बनना, जिन बातों में बादशाह बनना है वहाँ बेगर नहीं बनना। यही बुद्धि की कमाल चाहिए। जैसा समय, वैसी बात और वैसा अपना स्वरूप बना लो इसके लिए मुख्य चाहिए निर्णय करने की शक्ति और निर्ण शक्ति तब आयेगी जब अन्दर बाहर की सच्चाई और सफाई होगी।
8) भविष्य राज्य-भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय बेगमपुर के बादशाह हो अर्थात् संकल्प में भी गम वा दुःख की लहर न हो क्योंकि दुःखधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो। बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने का मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। पाना था सो पा लिया, इसी नशे और खुशी में रहो।

9) जो सर्व प्राप्तियों के नशे में सदा हर्षित रहते हैं उनका मन वाणी और कर्म सर्व आत्माओं को खुशी का दान देता रहेगा। वह किसी भी आत्मा के प्रति बाप समान दुःखहर्ता, सुखकर्ता, सदा बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेगा। बादशाह अर्थात् दाता।

10) जो ट्रस्टी होकर रहते हैं वह सदा बेफिकर बादशाह अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं, उन्हें रुहानी फखुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। कैसे भी सरकमस्टान्सेज़ हो लेकिन वह स्वयं हल्का रहेंगे, स्वयं सदा न्यारा। जरा भी वातावरण के प्रभाव में नहीं आयेंगे।

11) सतयुगी बादशाही इस संगमयुग की बेग़मपुर की बादशाही के आगे कुछ भी नहीं है। वर्तमान समय की प्राप्ति का नशा, खुशी, सतयुग की बादशाही से पद्मगुणा श्रेष्ठ हैं तो स्थाई रूप में इसी नशे और खुशी में रहो।

12) कभी व्यर्थ संकल्पों के हेमर से समस्या के पत्थर को तोड़ने में नहीं लगना। अब यह मजदूरी करना छोड़ो, बेगमपुर के बादशाह बनो। तो न समस्या का शब्द होगा, न बार-बार समाधान करने में समय जायेगा। यही संस्कार पुराने आपके दास बन जायेंगे, वार नहीं करेंगे। तो बादशाह बनो, तख्तनशीन बनो, ताजधारी बनो, तिलकधारी बनो।

13) संगमयुगी ब्राह्मण संसार के अधिकारी आत्मायें अर्थात् बेगमपुर के बादशाह। संकल्प में भी गम अर्थात् दुःख की लहर न हो। बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करो क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। अप्राप्ति दुःख का कारण है प्राप्ति सुख का साधन है। तो सर्व प्राप्ति स्वरूप अर्थात् सुख स्वरूप स्थिति में रहो।

14) ब्राह्मण संसार में सर्व सम्बन्ध बाप के साथ अविनाशी हैं तो दुःख की लहर कैसे होगी। सम्पत्ति में भी सर्व खज़ाने वा सर्व सम्पत्ति का श्रेष्ठ खज़ाना ज्ञान धन है, जिससे सर्व धन की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं।

15) बापदादा बच्चों के दुःख की लहर की बातें सुनकर वा देखकर सोचते हैं कि सुख के सागर के बच्चे, बेगमपुर के बादशाह फिर दुःख की लहर कहाँ से आई ! ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हों दुःख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान हैं। दुःख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हैं उन्हें कोई भी दुःख की लहर, अपनी तरफ खींच नहीं सकती।

16) जो मुरलीधर बाप की मुरली सुनकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हैं। उन्हें मुरली के साज़ से अविनाशी दुआ की दवा मिल जाती है, वे तन्दुरुस्त, मनदुरुस्त, मस्ती में मस्त हो बेपरवाह बादशाह बन जाते हैं। वे स्वयं को बाप के सर्व खज़ानों के मालिक, स्वराज्य अधिकारी बेगमपुर का बादशाह अनुभव करते हैं। संगमयुग पर ही बड़े ते बड़े बादशाहों की सभा लगती है। किसी भी युग में इतने बादशाहों की सभा नहीं होती है।

17) सबसे बड़े ते बड़ा बादशाह है बेफिक्र बादशाह और सबसे बड़े ते बड़ा राज्य है बेगमपुर का राज्य। बेगमपुर के राज्य अधिकारी के आगे यह विश्व का राज्य भी कुछ नहीं है। यह बेगमपुर के राज्य का अधिकार अति श्रेष्ठ और सुखमय है। है ही बे-गम। तो सदा इसी रूहानी नशे में रहो कि हम बेग़मपुर के बादशाह हैं, नीचे नहीं आओ।

18) बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खजाने का मालिक। खुशियों का खजाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है, इस अधिकार के कारण ही आज श्रेष्ठ आत्माओं के नाम और रूप का सत्कार होता रहता है। ऐसे बेगमपुर के बादशाह, जिन्हों का नाम लेने से ही अनेक आत्माओं के अल्पकाल के लिए दुःख दूर हो जाते हैं, जिनके चित्रों को देखते चरित्रों का गायन करते हैं और दुःखी आत्मा खुशी का अनुभव करने लगती है, ऐसे चैतन्य आप स्वयं बेगमपुर के बादशाह हो।

19) बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, तो आप बेगमपुर में चले जाना। जहाँ ईश्वरीय फ़खुर है वहाँ फिकर हो नहीं सकता, बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। तो आप सभी ईश्वरीय सम्पन्नता के खजाने वाले बेफिकर बादशाह हो। क्या होगा, कैसे होगा, इसका भी फिकर नहीं। त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहने वाले जानते हो जो हो रहा है वह सब अच्छा, जो होने वाला है वह और अच्छा।

20) गम और बेगम की अभी नॉलेज है, इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भल बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो। बादशाह अथवा राजे लोगों में ऑटोमेटिकली शक्ति रहती है राज्य चलाने की। लेकिन उस ऑटोमेटिक शक्ति को अगर सही रीति काम में नहीं लगाते, कहीं ना कहीं उल्टे कार्य में फंस जाते हैं तो राजाई की शक्ति खो लेते हैं और राज्य पद गंवा देते हैं।

21) अभी तुम बच्चे बेगमपुर के बादशाह हो और सर्वशक्तियों की प्राप्ति है लेकिन अगर कोई ना कोई संगदोष वा कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा वा खुशी प्राप्त है वह स्वत: ही खो जाती है, इसलिए मैं अष्ट शक्ति स्वरूप बेगमपुर का बादशाह हूँ, इस स्मृति को कभी भूलना नहीं।

22) विधि और विधान को जानने वाले बच्चे हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह। भविष्य राज्य- भाग्य प्राप्त करने के पहले वर्तमान समय भी बेगमपुर के बादशाह हो। संकल्प में भी गम अर्थात् दुःख की लहर न हो क्योंकि दुःखधाम से निकल अब संगमयुग पर खड़े हो।

23) बापदादा का हर बालक मालिक है। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक हो। ऐसे मालिकों के हर संकल्प सिद्ध होते हैं। ऐसी रेखा वाले सदा बेगमपुर के बादशाह होंगे। वे मुख से सदैव महावाक्य बोलेंगे। महावाक्य गिनती के होते हैं। तो दोनों एनर्जी संकल्प की और वाणी की व्यर्थ खर्च नहीं करो।

24) बेगमपुर के बादशाह सदा सुख की शैय्या पर सुखमय संसार में स्वयं को अनुभव करते हैं। ब्राह्मणों के संसार वा ब्राह्मण जीवन में दुःख का नाम निशान नहीं क्योंकि ब्राह्मणों के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। जब सम्पत्ति, सम्बन्ध सब प्राप्त हैं तो बेगमपुर अर्थात् संसार है। सदा सुख के संसार के बालक सो मालिक अर्थात् बादशाह हो।

25) ब्राह्मण आत्मायें जहाँ भी हैं, दुःख के वायुमण्डल के बीच भी कमल समान, दुःख से न्यारे, बेगमपुर के बादशाह हैं। तन की बीमारी के दुःख की लहर वा मन में व्यर्थ हलचल के दुःख की लहर वा विनाशी धन के अप्राप्ति की वा कमी के दुःख की लहर, स्वयं के कमज़ोर संस्कार वा स्वभाव वा अन्य के कमज़ोर स्वभाव और संस्कार के दुःख की लहर वायुमण्डल वा वायब्रेशन्स के आधार पर दुःख की लहर, सम्बन्ध सम्पर्क के आधार पर दुःख की लहर, कोई भी दुःख की लहर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती।

26) कभी भी कोई सेवा उदास करे, डगमग करे, हलचल में लाये तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। बेपरवाह बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, जिसके पीछे सफलता स्वयं आती है। आप सुखदाता की सुख स्वरूप आत्मायें हो, सुख के सागर बाप के बच्चे हो, सदा इसी स्मृति में रहना।

27) जैसे बच्चे माँ के पास स्वतः ही जाते हैं। कितना भी अलग करो फिर भी माँ के पास जरुर जायेंगे। तो सुख शान्ति की माता है पवित्रता। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति खुशी स्वत: ही आती है। यह ब्राह्मण परिवार बेगमपुर अर्थात् सुख का संसार है। तो इस सुख के संसार, बेगमपुर के बादशाह बन गये। हिज़ होलीनेस भी हो, लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है और बापदादा के दिलतख्तनशीन हो। तो सदा ताज, तख्त और तिलकधारी बनकर रहना।

28) जो सदा हर्षितमुख रहने वाली आत्मा है उनके हर संकल्प के वायब्रेशन्स द्वारा एक सेकेण्ड की रुहानी नज़र द्वारा, एक सेकेण्ड के सम्पर्क द्वारा, मुख के एक बोल द्वारा दुःखी व गम में रहने वाली आत्मा, अपने को सुखी व खुश अनुभव करेगी। उसका कर्तव्य होगा – सुख देना और सुख लेना। वे खुद भी बेफिकर बादशाह रहते हैं और दूसरों को भी अपने समान बना देते हैं।

29) बापदादा सदा बच्चों को यही कहते - 'ब्राह्मण जीवन अर्थात् बेफिक्र बादशाह''। ब्रह्मा बाप बेफिक्र बादशाह बने तो क्या गीत गाया – पाना था सो पा लिया, काम बाकी क्या रहा, आप क्या कहते हो? सेवा का काम बाकी रहा हुआ है, लेकिन वह भी करावनहार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे। हमको करना है – इससे बोझ हो जाता है। बाप हमारे द्वारा करा रहे हैं तो बेफिक्र हो जायेंगे।

30) सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है, कराने वाला करा रहा है। अगर "मैं कर रहा हूँ" तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। कर्म का फल भी इतना ही श्रेष्ठ मिलता है। तो सदा बाप द्वारा प्राप्त हुई बेफिक्र बादशाही वा हथेली पर स्वर्ग के राज्य-भाग्य की गॉडली गिफ्ट स्मृति में रखो।

31) बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में स्थित रहने वाले क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊंचा उड़ाता है। तो बेफिक्र बादशाह हो ना! कोई फिक्र है क्या? सेवा कैसे बढ़ेगी, अच्छे-अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे, कब तक सेवा करनी पड़ेगी - यह सोचते तो नहीं हो? असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे।